आर्थिक नियोजन का महत्व या आवश्यकता या गुण
(IMPORTANCE OR NEED OR QUALITIES OF ECONOMIC PLANNING)

पिछड़े एवं अर्ध-विकसित देशों में आर्थिक नियोजन का बड़ा महत्व है। **प्रो. रॉबिन्स** ने लिखा है कि "**आर्थिक नियोजन हमारे इस युग की महान् औषधि है।**" अतः **ऑस्कर लाँगे** (Oskar Lange) के मत में, "आजकल अनेक अल्प-विकसित देश यह विश्वास करते हैं कि उनके पिछड़ेपन का एकमात्र समाधान आर्थिक नियोजन ही है।" इन विद्वानों के कथनों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि राष्ट्र का विकास करने के लिए आर्थिक नियोजन आवश्यक है।

निम्नलिखित बातें आर्थिक नियोजन के महत्व को दर्शाती हैं :

(1) **साधनों का सर्वोत्तम उपयोग**—अल्प-विकसित राष्ट्रों में सीमित साधन, अपूर्ण ज्ञान, निरक्षरता एवं अज्ञान, निपुण श्रमिकों का अभाव, पूंजीगत एवं तकनीकी साधनों का अभाव, आदि के कारण तीव्र गति से विकास एवं उपलब्ध साधनों का सर्वोत्तम उपयोग करना सम्भव नहीं होता है। इससे बहुत-से साधन बिना काम में लिये ही पड़े रहते हैं। आर्थिक नियोजन करने से इन साधनों का उचित उपयोग किया जा सकता है और इस हेतु सुनियोजित रूप से विदेशी सहायता ली जा सकती है।

(2) **आर्थिक कुचक्रों की समाप्ति**—अल्प-विकसित देशों में कार्यकुशलता कम होती है, उत्पादन निम्न होता है तथा देश में निर्धनता व्याप्त होती है जिससे आर्थिक कुचक्र चलते रहते हैं। पूंजी का निर्माण धीमी गति से होता है। इन कुचक्रों को तोड़ने के लिए आर्थिक नियोजन आवश्यक होता है जिससे कि कार्यकुशलता में

Scanned with CamScanner

वृद्धि की जा सके, पूंजी-निर्माण की दर बढ़ायी जा सके व विनियोग की कुल मात्रा को प्रोत्साहित किया जा सके।

(3) **रोजगार समस्या का समाधान**—अल्प-विकसित देशों में बेरोजगारी काफी है जो दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अतः यह एक समस्या है जिसका हल करने के लिए आर्थिक नियोजन नितान्त आवश्यक है।

(4) **पूंजी का अभाव**—अर्ध-विकसित देशों में पूँजी-निर्माण की दर कम होती है। अतः वहाँ पूंजी का अभाव बना रहता है। इन देशों में प्रति व्यक्ति आय भी कम होती है। इस प्रकार, यहाँ विकास बहुत ही धीमी गति से होता है। आर्थिक नियोजन होने से उत्पादन बढ़ता है, प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है और पूंजी-निर्माण की दर भी बढ़ती है जिससे पूंजी में वृद्धि होती है और राष्ट्र का विकास तीव्र गति से होता है।

(5) **सम्पत्ति व साधनों का समान वितरण**—अल्प-विकसित देशों में सम्पत्ति व साधनों का असमान वितरण रहता है जिससे इनका पूर्ण शोषण और देश का विकास नहीं हो पाता है। आर्थिक नियोजन का दृष्टिकोण समाजवादी होता है जिसमें सम्पत्ति व साधनों के समान वितरण की व्यवस्था की जाती है। इससे देश में सन्तुष्टि की भावना जाग्रत होती है जो आर्थिक विकास में तेजी लाती है।

(6) **शिक्षित एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों का अभाव**—अर्ध-विकसित देशों में शिक्षा का अभाव होता है। वहाँ प्रशिक्षित व्यक्ति भी कम मात्रा म हीं मिलते हैं। आर्थिक नियोजन से शिक्षा का विस्तार होता है। प्रशिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध की जाती हैं जिससे कि उद्योग, व्यापार, कृषि व अन्य क्षेत्रों के लिए सुयोग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्ति मिलने में सुविधा रहती है तथा उनका विकास तीव्र गति से होता है।

(7) **जनसंख्या की समस्या**—अर्ध-विकसित देशों में जनसंख्या बढ़ने की गति तेज रहती है जिसके कारण ये देश अपना आर्थिक एवं सामाजिक विकास नहीं कर पाते हैं। अतः नियोजन की आवश्यकता इस समस्या के समाधान के लिए भी होती है।

(8) **विभिन्न क्षेत्रों के विकास में समन्वय**—एक देश में विभिन्न क्षेत्र होते हैं; जैसे वन, वृहत् उद्योग, व्यापार, वाणिज्य, परिवहन, संचार, लघु उद्योग, आदि। देश को समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाने के लिए इन सभी में समन्वय होना चाहिए। आर्थिक नियोजन इनमें समन्वय का कार्य करता है।

(9) **आर्थिक संरचना का विकास**—एक देश का सर्वांगीण विकास तव सम्भव है जबकि इस देश में अन्य सुविधाएँ, जैसे विजली, पानी, परिवहन, आदि भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। यह सुविधाएँ आर्थिक नियोजन के माध्यम से उपलब्ध की जा सकती हैं। इससे आर्थिक संरचना का विकास होता है।

उपर्युक्त बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि एक विकासशील देश में नियोजन की आवश्यकता होती है जिससे कि साधनों का उचित विदोहन हो सके, राष्ट्रीय आय बढ़ सके, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो, रोजगार सेवाओं का विस्तार किया जा सके, देश को आत्म-निर्भर बनाया जा सके, सम्पत्ति व साधनों में समान वितरण किया जा सके तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि कर रहन-सहन के स्तर को ऊपर उठाया जा सके।

Scanned with CamScanner